बुन्देलखण्डी लोककथाओं का संकलन

अहाड़ गओ पहाड़ गओ

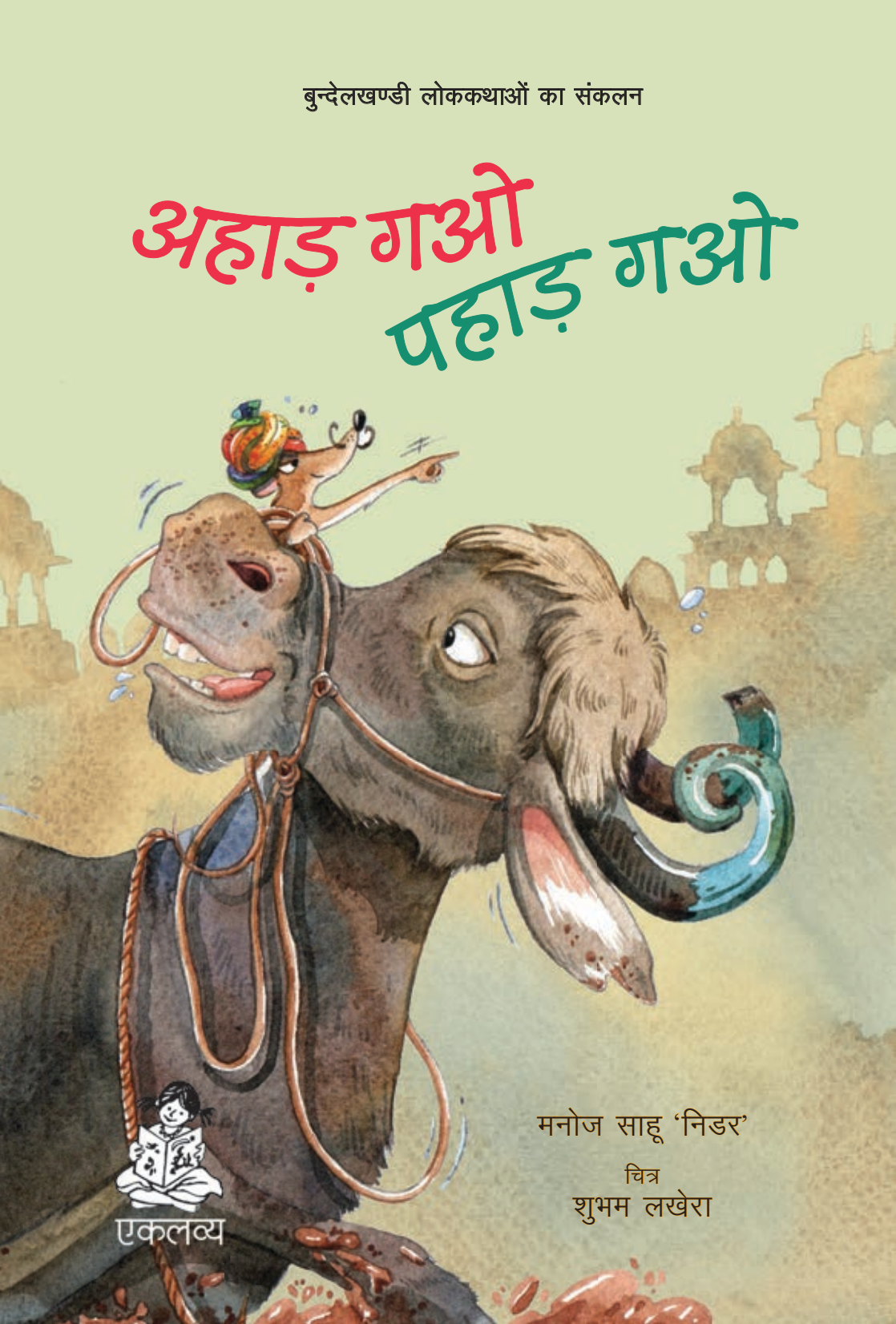

मनोज साहू 'निडर'

चित्र
शुभम लखेरा

एकलव्य

बुन्देलखण्डी लोककथाओं का संकलन

अहाड़ गओ पहाड़ गओ

मनोज साहू 'निडर'

चित्र
शुभम लखेरा

एकलव्य

अपनी बात	3
अहाड़ गओ, पहाड़ गओ	4
फूटा और चिरैया	9
ढोंगी लड़ैया	13
चतुर लड़ैन	16
करनी का फल	20
चन्दा और डुकरिया	23
समुन्दर का खारापन	25
हरजू के बन्ना	27
कहानी में आए बुन्देलखण्डी शब्द	30

अपनी बात

हमारा देश किस्से-कहानियों का देश माना जाता है। यहाँ बच्चों से लेकर बड़े-बूढ़े तक सभी रुचि के साथ कहानियाँ सुनते-सुनाते हैं। कहानियों में लोककथाओं का अपना ही महत्व है। लोककथाएँ वे कहानियाँ हैं जो हमें परम्परागत वसीयत के तौर पर मिली हैं। लोककथाओं का इतिहास इतना पुराना है कि यह कोई नहीं जानता कि ये किसने लिखी हैं, या पहले-पहल किसने सुनाई होंगी। देश-दुनिया के हर अंचल में लोककथाओं का भण्डार भरा हुआ है। ये कथाएँ एक कान से दूसरे कान व एक जगह से दूसरी जगह आती-जाती रहती हैं, और साथ ही नया रूप भी गढ़ती जाती हैं। इसीलिए लोककथाओं में हमेशा नयापन बना रहता है।

बुन्देलखण्ड में किस्सागोई (कहानी सुनाने) की गौरवशाली परम्परा रही है। कहानी सुनाने में दादा-दादी, नाना-नानी की प्रमुख भूमिका तो है ही, साथ ही सार्वजनिक रूप से भी कहानियाँ सुनाने का आयोजन किया जाता था। अभी ज़्यादा वक्त नहीं बीता है, जब गाँव-देहातों में रात के समय गाँव की चौपाल, बाखर या अन्य किसी उपयुक्त जगह पर अक्सर बैठकें जमा करती थीं और किस्से-कहानियों का दौर चलता रहता था।

बुन्देली अंचल की लोककथाओं के अथाह सागर में से कुछ को चुनकर के इस संकलन में प्रस्तुत किया जा रहा है। प्रस्तुत लोककथाओं को किस्सा कहने की शैली में तैयार करने का प्रयास किया गया है, ताकि बच्चे कहानी पढ़ते हुए कहानी सुनने जैसा आनन्द भी ले सकें।

इन्हें पढ़कर आप सभी को बहुत मज़ा आएगा। इसी उम्मीद के साथ...

मनोज साहू 'निडर'

अहाड़ गओ, पहाड़ गओ

एक डुकरिया हती। बा धूरा में रोटी बना रई ती। इत्ते में कहीं से एक मूसा आ गओ। बो बोलो, "बऊ! बऊ! तू धूरा में रोटी काय बना रई है?" डुकरिया ने कई, "अब का करूँ बेटा, कण्डा नईं, लकड़ी नईं, कछु बरीतो नइयाँ, ते से धूरा मेंई रोटी बना रई हूँ।" जा सुनके मूसा ने कण्डा-लकडी लान दये।

जब सबरी रोटी बन गईं तो मूसा भैया जा रोटी पे कूँद, बा रोटी पे कूँद। डुकरिया बोली, "काय मूसा भैया! जो का कर रओ है?"

मूसा बोलो, "सुन बऊ! मैं अहाड़ गओ, पहाड़ गओ। पहाड़ से मैंने लकड़ी लाओ। लकड़ी मैंने तोकूँ दई। अब तू का एक रोटी सेई भारी?"

जा सुनके डुकरिया ने मूसा खों एक ठों रोटी दे दई। रोटी लेके मूसा भैया आंगे चल दये।

उतै, गैल में एक कुम्हारन को मौड़ा गधैया पे बैठो-बैठो रो रओ थो। मूसा ने कुम्हारन से पूछीं, "काय जिज्जी! जो मुन्ना काय ठुनक रओ है?" कुम्हारन बोली, "मूसा भैया जाहे भूँक लग रई है, सो रोटी खानबे मचल रओ है।" जा सुनके मूसा ने रोटी कुम्हारन के मौड़ा को दे दई। मौड़ा मोंग गओ। अब तो मूसा भैया जा दोहनिया पे कूँद, बा दोहनिया पे कूँद। कुम्हारन बोली, "काय मूसा भैया! जो का करन लगो?"

मूसा बोलो, "सुन जिज्जी! मैं अहाड़ गओ, पहाड़ गओ। पहाड़ से मैंने लकड़ी लाओ। लकड़ी मैंने बऊ कूँ दई। बऊ ने मोहे रोटी दई। रोटी मैंने तोकूँ दई। अब तू का एक दोहनिया सेई भारी?"

कुम्हारन ने एक दोहनिया दे दई। दोहनिया लेके मूसा भैया आंगे चल दये।

आंगे चलके मूसा ने देखो के एक ग्वालन ओखरी में दहीं भाँ रई ती। मूसा बोलो, "काय बाई! ओखरी में दहीं काय भाँ रई है?" ग्वालन ने कई, "का करूँ बेटा, मेरी दोहनिया फूट गई, ते से ओखरी मेंई दहीं भाँ रई।" मूसा बोलो, "बाई! मेरी दोहनिया कब काम आहे?" जा कै के मूसा ने दोहनिया ग्वालन खों दे दई। ग्वालन दोहनिया में दहीं भाँन लगी। अब तो मूसा भैया जा भैंस पे कूँद, बा भैंस पे कूँद। ग्वालन बोली, "अरे मूसा भैया! जो का कर रओ है?"

मूसा बोलो, "सुन बाई! मैं अहाड़ गओ, पहाड़ गओ। पहाड़ से मैंने लकड़ी लाओ। लकड़ी मैंने बऊ कूँ दई। बऊ ने मोहे रोटी दई। रोटी मैंने कुम्हारन के मौड़ा खों दई। कुम्हारन ने मोहे दोहनिया दई। दोहनिया मैंने तोकूँ दई। अब तू का एक भैंस सेई भारी?"

ग्वालन ने एक भैंस दे दई। भैंस लेके मूसा भैया आंगे चल दये।

चलत-चलत मूसा एक गाँव में पोंच गओ। बाने देखो के एक राजा अपनी सुसरार से रानी की बिदा करबा के ला रओ तो। रानी तो डोली में सवार हती, मनों राजा निगत-निगत जा रओ तो। राजा खों निगत देख मूसा बोलो, "अरे राजा साब! तुम निगत-निगत काय जा रये?"

राजा बोलो, "अब का बताऊँ मूसा भैया, मेरे कनै हाती-घोड़ा नइयाँ।" मूसा बोलो, "राजा साब! हाती-घोड़ा नइयाँ तो जा भूरी भैंसई सई।" राजा भैंस पे बैठके चल परो। अब तो मूसा भैया जा डोली पे कूँद, बा डोली पे कूँद। राजा बोलो, "काय मूसा भैया! जो का कर रये हो?"

मूसा बोलो, "सुनो राजा साब! मैं अहाड़ गओ, पहाड़ गओ। पहाड़ से मैंने लकड़ी लाओ। लकड़ी मैंने बऊ कूँ दई। बऊ ने मोहे रोटी दई। रोटी मैंने कुम्हारन के मौड़ा खों दई। कुम्हारन ने मोहे दोहनिया दई। दोहनिया मैंने ग्वालन खों दई। ग्वालन ने मोहे जा भैंस दई। भैंस मैंने तोकूँ दई। अब तुम का एक रानी सेई भारी?"

राजा ने रानी दे दई। रानी खों लेके मूसा भैया खुसी-खुसी घरे आ गये।

घरे आके मूसा रानी से बोलो, "सुनो रानी साब! मैंने भौतई दिनन से सपरो नइयाँ, तनक मेरे सपरवे के लाने असल सो तातो पानी कर देओ।"

रानी ने खूबई खौलतो पानी कर दओ। मूसा सपरवे के लाने सपन्ना में बैठ गओ। रानी ने ऊपरे से खौलतो पानी डार दओ। मूसा भैया भईं सपरत रह गये। रानी राजा के घरे आ गई।

किस्सा हती खतम।

*

फूटा और चिरैया

एक चिरैया हती। एक दिना बाहे गैल में एक फूटा परो मिलो। चिरैया ने फूटा चोंच में दबा लओ और उड़के एक खूँटा पे बैठके फूटा खान लगी। फूटा चोंच से सटक के खूँटा में भरा गओ। चिरैया ने भौत जुगत भिड़ाई मनों खूँटा में से फूटा नईं निकरो।

चिरैया उड़त-उड़त बढ़ई के झाँ पोंच गई और कहन लगी, "बढ़ई भैया! बढ़ई भैया! तू खूँटा काटके मेरो फूटा निकार दे, मोहे फूटा खानो है।" बढ़ई ने कई, "मैं का तेरो नौकर हूँ, मैं खूँटा काय काटूँ?" चिरैया ने कई, "मैं तेरी शिकायत रानी से कर देऊँ।" बढई बोलो, "हाँ, हाँ, कर दइये।"

चिरैया उड़त-उड़त रानी के ढिंगा पोंची और बोली, "रानी साब! रानी साब! तुम बढ़ई खों सजा देओ। बाने खूँटा काटके मेरो फूटा नईं निकारो।" रानी बोली, "बढ़ई ने मेरो का बिगारो है, मैं बिना कसूर बाहे सजा काय देऊँ?" चिरैया बोली, "मैं मूसा के पास जा रई हूँ।" रानी ने कई, "तोहे जितै जाने होय उतै चली जा।"

चिरैया फुर्र से उड़के मूसा के झाँ पोंच गई और बोली, "मूसा भैया! मूसा भैया! तू रानी के उन्ना-कपरा काट दे।" मूसा बोलो, "भग मैं काय काटूँ, रानी ने मेरो का बिगारो है?" चिरैया बोली, "तोहे नईं काटने तो मत काट। मैं बिल्ली के पास जा रई हूँ।"

ऐसी कहके चिरैया उड़के बिल्ली के पास आ गई और बोली, "बिल्ली मौसी! बिल्ली मौसी! तू मूसा हे खाजा।" बिल्ली बोली, "भग मैं काय खाऊँ।"

अब चिरैया ने कुत्ता के पास जाके बासे बिल्ली खों मारबे की कई। तो कुत्ता बोलो, "मैं तेरे कहबे से बिल्ली हे काय खाऊँ।" ऐसी कहके कुत्ता ने भी मना कर दई।

चिरैया उड़के डण्डा के पास पोंची और बोली, "डण्डा भैया! डण्डा भैया! तू कुत्ता हे पीट दे।" डण्डा बोलो, "मैं काय पीटूँ?"

चिरैया उड़के आगी के झाँ पोंची और बोली, "आगी! आगी! तू डण्डा खों जला दे।" आगी ने कई, "चल जा! जा! मैं काय जलाऊँ?"

चिरैया ने हार नईं मानी और पानी के पास जा पोंची। बोली, "पानी भैया! पानी भैया! तू आगी हे बुझा दे।" पानी बोला, "मैं काय बुझाऊँ।"

चिरैया उड़के हाथी के पास पोंची और बोली, "हाथी दादा! हाथी दादा! तुम नदिया को पूरो पानी पी जाओ।" हाथी बोलो, "चल, चल, मोहे इत्ती फुर्सत नइयाँ के तेरे कहबे से मैं नदिया को पानी पीबे जाऊँ?" अब तो चिरैया भौतई रुआँसी हो गई। मनों बाने हार नईं मानी।

थकी-हारी चिरैया चींटी के पास पोंची और चींटी से बोली, "चींटी भैंन! चींटी भैंन! तू हाथी की सूँड में घुसके काट खा।" चींटी बोली, "पैलें मोहे पूरी बात बता, मैं हाथी की सूँड में काय घुसूँ?" चिरैया ने पूरो किस्सा सुना दओ।

चींटी खों चिरैया पे दया आ गई। बा तैयार होके हाथी की सूँड में भराबे के लाने चल दई।

जब हाथी खों पता चलो के चींटी सूँड में भराबे काजे आ रई है तो बो घबरा गओ और चिरैया से बोलो, "चिरैया भैंन! मैं नदिया को पूरो पानी पीबे काजे जा रओ हूँ।"

जा बात पानी खों पता चली के हाथी पानी पीबे काजे आ रओ है, तो पानी आगी खों बुझाने काजे उतारूँ हो गओ। आगी डिराके डण्डा खों जलान लगी। डण्डा ने कुत्ता हे मारबे के लाने गदबद दे दई।

जब कुत्ता ने डण्डा खों सपाटे से आत देखो तो बो बिल्ली हे खाबे के लाने चल दओ। बिल्ली ने सुनी तो चिरैया से बोली, "बड़ी जिज्जी, मोसे भूल हो गई, मैं अब्बई मूसा खों पकरबे के लाने जा रई हूँ।"

बिल्ली के आबे की सुनके मूसा रानी के उन्ना-कपरा काटबे के लाने चल दओ। जब रानी हे पता चलो के मूसा कपरा काटबे आ रओ है तो रानी ने बढ़ई खों पकरबे के लाने सिपाई भेज दये। सिपाइयों खों देखके बढ़ई के हाथ-पाँव फूल गये। बो खूँटा हे फाड़बे के लाने तैयार हो गओ।

बढ़ई ने बसूला लेके खूँटा हे फाड़ दओ। खूँटा फट गओ तो बामें से फूटा निकर आओ। फूटा हे अपनी चोंच में दबाके चिरैया हँसी-खुसी उड़ गई और दूसरे खूँटा पे बैठके फूटा खान लगी।

किस्सा हती खतम।

*

ढोंगी लड़ैया

एक हतो लड़ैया। बो सबरे दिन इतै-उतै घूमत-फिरत रहत तो। एक दिना बो डोलत-डालत गाँव में पोंच गओ। उतईं घूरे को ढेर हतो सो लड़ैया जाके घूरे के ढेर पे बैठ गओ। घूरे पे कछु गोबर डरो तो और कछु किताब के पन्ना डरे ते। गोबर के संगे एक पन्ना लड़ैया की पूँछ में चिपक गओ। लड़ैया भगत-भगत अपने दूसरे गोइयों के पास पोंचो। पूँछ में पन्ना चिपको देखके एक ने कई, "काय भैया! तेरी पूँछ में जो का अटक रओ है?" लड़ैया ने पलटके पूँछ की तन देखो फिर कछु ऐंठके बोलो, "अरे! जो तो सरपंची को पट्टो है। आज से मैं तुम सबन खों नओ सरपंच हूँ। अब अपन कहीं भी बेखटका आ-जा सकत हैं और अब तुमाये से कोऊ कछु नईं कै सकत।" जा सुनके सबरे लड़ैया भौतई खुस भये। खुसी-खुसी में उन्ने सरपंची को परसाद बाँट दओ।

अब तो नये सरपंच जू जितै से भी निकरें, उन्हें देखके सबरे लड़ैया राम-राम करबे के लाने ठाड़े हो जायँ। जा देखके सरपंच जू फूले नईं समायँ। एक दिना भओ का के सरपंच जू पंचायत लगाके बैठे ते तबईं एक लड़ैया ने ठाड़े होके कई, "सरपंच जू! तुमाये में और हमाये में कोई फरक समझ नईं आत, सो कछु ऐसो जतन करो के तुमायी हमन से अलग पहचान हो जाय और हम दूर सेई चीन्ह लेबे के सरपंच जू चले आ रये हैं।" जा बात सरपंच जू खों जम गई, उन्ने हामी भर दई। फिर सब लड़ैयन ने सूद-सला करके एक तीन-चार हात को डण्डा सरपंच जू की पूँछ से बाँध दओ। इत्ती लम्बी पदवी पाके सरपंज जू गदगद हो गये। अब तो सरपंच जू जितै से भी निकरें खड़-खड़ को ऐरो होन लगे। ऐरो सुनके सबरे चेत जायँ और राम-राम करबे के लाने खड़े हो जायँ। जो सब देखके सरपंच जू फुलन्दी में रैन लगे।

एक दिना कछु लड़ैया रीझ के सरपंच जू से बोले, "दद्दा, आज हमाओ मन गाँव में घूमबे को हो रओ है, तनक गाँव की सैर तो करा देओ। कित्ते दिनन से गाँव को मोंई नईं देखो।" जा सुनके सरपंच जू कछु सुटपुटान से लगे। उन्हें अचकचात देखके एक ने कई, "दद्दा, ऐसे काय डिरा रये? अब तो तुमाये पास पट्टो धरो है।" जा सुनके सरपंच दद्दा कछु नईं बोले और मन मारके उनके संग लग लये।

जब सबरे लड़ैयन को झुण्ड गाँव के बगल में पोंचो तो उन्हें देखके गाँव के सबरे कुत्ता एक जिंघा जुर गये और जोर-जोर से भौंकन लगे। कुत्तों खों भौंकत देख सरपंच जू पीछे पिछलन लगे। सरपंच जू को पिछलत देखके एक ने ताव देके कई, "दद्दा डिराओ मती, अपनो पट्टो दिखा देओ।" सरपंच जू ने रुआँसे होके कई, "अब जे गँवारन खों का पट्टा दिखाओ, जे का पढ़े-लिखे हैं? इनके मों लगबे से कोऊ फायदा नइयाँ।" जा कै के सरपंच जू ने उल्टे पाँव गदबद दे दई। उनके पाँछे-पाँछे सबरे लड़ैया भग दये। पीछे से कुत्ता भी दौर परे।

सबरे लड़ैया दौड़ के माँद में भरा गये। मनों सरपंच जू तनक पाँछे रै गये। उनकी पूँछ से बँधो डण्डा माँद के मों पे अड़ गओ। सरपंच जू ने खूब दम मारी, मनों बे भीतरे नईं भरा पाये। जा देखके एक लड़ैया बोलो, "सरपंच जू उतै का कर रये हो, जल्दी से भीतरे भरा जाओ।" सरपंच जू खीझ के बोले, "अब मैं का बताऊँ भैया, मेरी सरपंची तो बाहरेई अटक रई है।" सरपंच जू भईं कसमसात रै गये। बाकी सबरे लड़ैया डिरा के माँद में चिमा गये।

किस्सा हती खतम।

*

चतुर लड़ैन

एक जंगल में लड़ैया और लड़ैन रहत हते। उनके तनक-तनक से मौड़ी-मौड़ा भी हते। लड़ैया और लड़ैन जंगल में इतै-उतै घूमघाम के शिकार करत रहत और उतईं नदिया को पानी पीके माँद में डरे रहत। एक दान का भओ के जंगल को राजा शेर डोलत-डालत नदिया तन पानी पीबे आओ। बाखों जा जिंघा कछु असल लगी, काय से के जंगल के सबरे जानवर भईं पानी पीबे आत ते। शेर ने गुन्ताड़ो लगाओ के बैठे-ठाले झईं शिकार मिल रओ है, तो फिर जंगल में इतै-उतै भटकबे की का जरूरत है? ऐसो विचार करके बाने उतई डेरा डार दओ। अब जौन जानवर पानी पीन आबे, उनमें से एकाध खों मार-मूर के अपनो पेट भर लेबे और भईं डरो रैबे।

एक दान लड़ैया और लड़ैन खों भौतई जम के प्यास लगी। नदिया में शेर बैठो तो। उन्ने खूब मन समझाओ मनों जब प्यास के मारे प्रानन की परन लगी तो कररो जी करके नदिया तन चल दये। जब बे ठिया पे पोंचे तो उनको जी धक्क से हो गओ। सामनेई शेर बैठो तो और बाने इन्हें देख लओ तो। अब तो बचके भगबे की भी गैल नईं ती।

लड़ैया बोलो, “देख लेओ, मैंने कई थी नईं, बोई भओ। आज तो जान सेई हात धोने परहें।” लड़ैन कहन लगी, “तुम तनक धीरज तो धरो, मैं सब सम्हार लेहूँ।” ऐसी कहके बाने इशारे से लड़ैया खों सब समझा दओ और फिर जोर से चिल्लाके बोली, “देख लेओ! बे सामने जेठ जू बैठे हैं, करवा लेओ उनसे फैसला। मैं तो मेरे बाँटे में तीनईं लेहूँ और तुम्हें दोई लेने परहें।” लड़ैया भी जोर

से चिल्ला के बोलो, "हाँ, हाँ करवा लेओ फैसला, मेरे बाँटे में तीन आहे तीन, समझी।"

ऐसई लड़त-भिड़त दोई शेर के कने पोंच गये। उन्हें देखते सेई शेर के मों में पानी आ गओ। शेर ने पूछी, "काय भौजी का बात हो गई? तुम दोई ऐसे काय लड़ रये हो?"

लड़ैन बोली, "जेठ जू! तुमाई दुहाई है हजूर, हमरो न्याव तो तुमई कर सकत हो। जो लड़ैया मेरो मरद है। हमरे घरे रोजई चिकल्लस होत है सो हमने अलग-अलग रैबे को फैसला कर लओ है। हमरो झगड़ो जा बात पे है के हमरे पाँच मौड़ा-मौड़ी हैं, जो कै रओ के तीन मैं लेहूँ, और मैं कै रई हूँ के मैं महतारी हूँ सो तीन मौड़ा-मौड़ी पे मेरो हक है।" शेर इतै-उतै देखके बोलो,

"तुमाये मौड़ा-मौड़ी तो दिखई नईं रये।" लड़ैन बोली, "हजूर! तुम हुकम कर देओ तो मैं सबखों झईं बुलवा लेऊँ, सो तुमई फैसला कर दइओ।"

लड़ैन की बात सुनके शेर ने मन में विचार करो के बैठे-बिठाये अच्छो शिकार फँस गओ, पाँचई मौड़ा-मौड़ी के और बुलवा लेऊँ फिर एकई झटका में सब साफ। शेर बोलो, "अच्छी बात है, उने भी बुलवाई लेओ, फिर मैं सबको फैसला कर देऊँ।"

जा सुनके लड़ैन लड़ैया से बोली, "लेओ सुन लई तुमने, हजूर ने का कई? अब तुम जल्दी से पानी पीके जाओ और सबरे मौड़ा-मौड़ी खों लेके आओ।"

इत्ती सुनके लड़ैया नदिया में पानी पीबे भरा गओ और जी भरके पानी पिओ। फिर भगत-भगत अपनी माँद के भीतरे भरा गओ और लुक के बैठ गओ। इतै लड़ैन खों बैठे-बैठे भौतई अबेर हो गई तो बा शेर से बोली, "तुमई देखलो हजूर, कित्तो मक्कार है, तनक से

काम में इत्ती देर लगा दई। अबै तक नईं लौटो। तुमरो हुकम होबे तो मैं जाके देखूँ का बात है, और सबन खों जल्दी से लेके आऊँ? अब तुम भी हमरो न्याव करवे के लाने कब तक बैठे रैहो।" शेर ने हामी भर दई।

फिर तो लड़ैन ने जी भरके पानी पिओ और अपने घर की गैल धर लई। अपनी माँद में पोंच के दोई भौत खुस भये।

उतै शेर उनके लौटबे की रस्ता देखत-देखत उकता गओ। बाहे भौत जोर से भूँक लग रई ती तो खुदई चलके लड़ैन की माँद के झाँ पोंच गओ। दूर सेई शेर खों आत देखके लड़ैन बोली, "हजूर! अब जे कै रये हैं कि लड़बे-झगड़बे में कोई सार नईं है, तू ही तीन ले लइये।" सो हजूर हमरो निपटारो तो हमई ने कर लओ।

शेर मों लटका के बापस आ गओ।

किस्सा हती खतम।

*

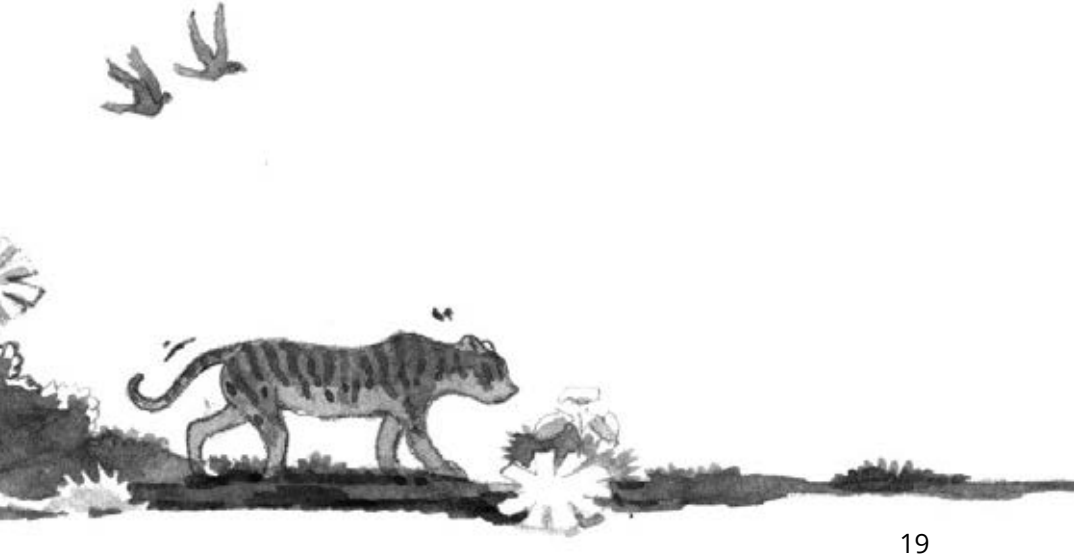

करनी का फल

एक लड़ैया और एक ऊँट पक्के गोई हते। दोई संग-संग रहबे, संगई खाबे-पीबे और घूमे-फिरें। जितै बे रहत ते, उतईं पे एक नदिया बहत ती। नदिया के पल्ले पार डंगरबाड़ी लग रई तीं। उन्हें देख-देखके उनको जी खूब ललचाबे। जब डंगरा-कलींदे पक गए तो उनकी बास से दोइयों की लार टपकन लगी। दोई गोइयों ने सूद-सला करके नदिया पार जाबे की जुगत भिड़ाई। जैसई रात भई, लड़ैया ऊँट की पीठ पे बैठ गओ और दोई जने नदिया के बा पार पोंच गये। डंगरबाड़ी में घुसके भरपेट डंगरा-कलींदे खाये और भुनसारो होबे से पैलें जंगल में लौट आये। उन्हें भौत मजा आओ। उन्हें लपकौ लग गओ तो रोजई जई काम करन लगे।

एक दिना का भओ, रात में दोई गोई खेत में डंगरा-कलींदे खाबे के लाने डंगरबाड़ी में पोंच गये। जुनैया रात हती, ठण्डी-ठण्डी हवा चल रई ती। उन्ने डट के डंगरा-कलींदे खाये। सुहानो मौसम देखके लड़ैया ऊँट से बोलो, "देख मामा! आज कित्तो अच्छो मौसम है, जुनैया रात है, तरैयाँ भी छिटक रई हैं। मेरो मन कर रओ है के आज मैं खूब जी भरके गाना गाऊँ।"

ऊँट बोलो, “रहन दे भान्जे, जो गानो गाबे को टेम नइयाँ। जा मत भूल के हम झाँ चोरी से कलींदे खाबे काजे आये हैं। तेरो गानो सुनके खेत बारो जग गओ तो हमरी हड्डी-पसरी एक कर देय। अपनो भलो तो जई में है के चुपचाप कलींदे से पेट भरो और अपनो रस्ता लगो। गानो गाके आफत मोल काय ले रओ।”

लड़ैया खों ऊँट की बात बुरी लगी। बो गुस्सा से बोलो, “मामा! तू तो बिलकुल मूरखई रहे। अरे, तू का जाने संगीत का चीज होबे है, तेरे दिमाग में तो गोबर भरो है।”

लड़ैया की बात सुनके ऊँट बोलो, “ठीक है बेटा! जब तोखों गाबे को इत्तोई सोक चर्रा रओ है तो कर लेय मन की। मनों मेरी सीख याद रख लेओ – बेसमय को राग कभऊँ नईं सुहाय, सौ मुसीबत सिर पे आय।” ऐसी कहके ऊँट डंगरबाड़ी से निकर आओ।

उतै लड़ैया ने हुआ-हुआ चिल्लाबो सुरू कर दओ। पासई की टपरिया में खेत को रखवारो सो रओ तो। लड़ैया की हुआ-हुआ सुनके बा की नींद खुल गई। बो डण्डा लेके लड़ैया तन दौरो। लड़ैया चौंक देके भग गओ। मनों ऊँट से भगतई नईं बनो। रखवारे ने ऊँट खों गेंत लओ। बा रात ऊँट की भौत कुटाई भई। बा के हात-पाँव सुजा दये। ऊँट जैसे-तैसे बच-बचूके निकर भगो। बाहे लड़ैया पे भौत गुस्सा आ रई तीं। बाने मनईं मन लड़ैया से कसर निकारबे की ठान लई।

कछु दिना बाद बे फिर खेत में पोंच गये। उन्ने रात भर छक के डंगरा-कलींदे खाये और फिर भुनसारे-भुनसारे जंगल तन लौटन लगे।

नदिया में मुतकों पानी हतो सो लड़ैया ऊँट की पीठ पे बैठो तो। जब दोई बीच मँझधार में पोंचे तो ऊँट मामा कहन लगे, "अहा! आज नदिया में कित्तो ठण्डो-ठण्डो, छनो-कंचन पानी भरो है। भान्जे मेरो मन तो आज सपरवे को हो रओ है। मोहे तो लुरास आ रई है। मैं तो अबई सपरहूँ।"

जा सुनके लड़ैया भैया घबरा गये। उनकी नाड़ी सुटपुटान लगी। रुआँसो होके बोलो, "अरे मामा! जो का करन लगे? झाँ बीच धार में सपरहो, तो मेरो का हुइये।"

"अब तेरी तू जान, मैं तो सपर रओ।" ऐसी कहके ऊँट ने जो गुपची मारी तो लड़ैया उतराके पानी में गुप-गुप करन लगो।

ऊँट नदिया में से निकरके जंगल में चलो गओ।

किस्सा हती खतम।

*

चन्दा और डुकरिया

एक डुकरिया ती। बा एकली टपरिया में रहत ती। उन दिनन में जो आसमान भौतई नीचो हतो। इत्तो नीचो के घर की मंगरी जैसो। बदरा मूँड़ के ऊपरै से उरत रहत ते और जे चन्दा-तारे आदमियन की मुण्डी से भिड़ जात ते। सूरज भी नीचे हतो, सो भौतई तपत रहत तो। ताके मारे लोग-बाग दुफैरिया में घर से नईं चिंगत ते, कै तो भुनसारे की बिरियाँ कै संजा बेरा घर से निकरत ते। कभूँ-कभूँ जुनैया रात में मौड़ा-मौड़ी बदरा पे बैठके घूमन निकर परें, तो कभूँ चन्दा मम्मा के घरे मिजबानी करन चले जायँ।

डुकरिया भौतई हैरान-परेशान रहत ती। काय से के बा बुहारी फेरबे के लाने घर से निकरे तो कभूँ कहीं के तारे से भिड़ के खुपड़िया फोर लेय, तो कभूँ बुहारी ऊपरे करे तो चन्दा खों लग जाये। डुकरिया मनई-मनई बड़बड़ान लगे और आसमान खों गारी बकन लगे।

एक दिना का भओ, बरसात के दिना ते। मौड़ा-मौड़ी बदरा पे बैठके इतै-उतै फिर रये ते। फिरत-फिरत बे डुकरिया की टपरिया के ऊपरे आ गये। डुकरिया आँगन में बुहारी फेर रई ती। मौड़ा-मौड़ी डुकरिया हे खिझान लगे, बा बुहारी लेके उनके पीछे दौर परी और दौरत-दौरत चन्दा से टकरा गई। डुकरिया की मुण्डी सन्ना गई। बाखों जम के गुस्सां आ गई। बा चन्दा के ऊपरे बुहारी लेके पिल परी और दस-बीस बुहारी जड़ दई।

जा बात आसमान खों अखर गई। बो भी डुकरिया से रूस गओ और ऊपरे की तन उठन लगो और ऊपरेई उठत गओ। जो देखके डुकरिया को गुस्सां ठण्डो पर गओ। बा भी दुखी होके आसमान खों जाबे से रोकन लगी। मनों आसमान नईं रुको। डुकरिया बुहारी लेके चन्दा से चिपक गई और चन्दा के संगे-संगे भौतई दूर आकाश में पोंच गई।

ऐसी कैनात है कि बई डुकरिया आज भी चन्दा पे जाके रै रई है। बा की छैंया धरती से आज लौ दिखात है।

किस्सा हती खतम।

*

समुन्दर का खारापन

एक बऊ हती। बा अकेली रहत ती। मौड़ा-मौड़ी कोई थे नईं, सो दिन-रात भगवान को भजन सुमरन करत रहत ती। बऊ की भगती से खुस होके एक दिना भगवान ने दरसन दे दये। बऊ से कई, "माँग डुकरिया तोये का माँगनो है?" बऊ ने कई, "मोखों कछु नईं चइये, तुमाये दरसन पा लये तो सब कछु पा लओ।" जा सुनके भगवान गदगद हो गये और आसिरबाद देके एक चखिया दे गये। और कै गए के तुमायी जो भी मनशा हुइये जा चखिया पूरी कर देहे। उन्ने चखिया खों सुरू और बन्द करबे को मन्तर सोई बता दओ।

बऊ के तो दिनई फिर गये। बऊ खों ते चीज को मन करे, चखिया से कै देबे। फिर तो तुरतई चखिया चालू और चीज हाजिर। जित्ती जरुरत होबे उत्ती चीज लेके बऊ मन्तर पढ़ देबे तो चखिया बन्द हो जाबे। अब तो बऊ की मौजई-मौज। ऐसई दिन बीतत रये।

एक दान गाँव में एक परदेसी सौदागर आओ। सौदागर खों चखिया की करामात के बारे में पता चल गओ तो, सो बो चखिया खों हतियाबे की फिराक में थो। बाने बऊ खों भौत पोटी मनों बऊ पुटाऊँ नईं आई। एक दिना सौदागर खों मौका मिल गओ। बऊ गाँव-बस्ती में कईं गई हती, सो सौदागर ने भड़या की नाईं चखिया उठाई और हरबिल्यान हो गओ। बो जहाज में बैठके समुन्दर की रस्ता अपने देस खों लौट परो।

सौदागर जहाज में ब्यारी कर रओ हतो। बाखों साग कछु अलोंनी लगो। जहाज में नोन भी नईं हतो। तबई बाहे चखिया की सुरत आ गई, सो बाने चखिया के सामने नोन की इच्छा परगट कर दई। भाँ का देरदार हती, चखिया चालू भई तो नोन का ढेर लगा दओ। नोन का ढेर लगतई जा रओ तो। जा देखके सौदागर घबरा गओ। काय से कै चखिया बन्द करबे को मन्तर तो मालुमई नईं थो। इतै जब नोन को बजन जादा बढ़ गओ तो जहाज समुन्दर में भईं डूब गओ। मनों चखिया फिर भी चलतई रई।

बूढ़े-सयाने ऐसी कहबे हैं के समुन्दर में बा चखिया आज भी चल रई है, तेइसे समुन्दर को पानी अबे तक खारो है।

किस्सा हती खतम।

*

हरजू के बन्ना

एक गाँव में एक दादा-बऊ रहत हते। बऊ को नाम हतो हरजू। उनको एकई मौड़ा हतो। उन्ने बाखों भौतई लाड़-प्यार से पालो-पोषो और पढ़ाओ-लिखाओ। जब मौड़ा ब्याव बारो हो गओ तो दादा ने जोरे के गाँव में एक असल-सी मौड़ी देखके ब्याव की बात पक्की कर दई और मौड़ी की ओली-झोली भर दई। इतै घर में ब्याव को चकरचालो सुरू हो गओ। बऊ भौतई खुस हो रई ती काय से के बाखों एकई तो मौड़ा हतो सो ब्याव में कछु कोर-कसर नईं छोड़न चाय रई ती।

एक दिना दादा ब्याव को सौदा-समान लेवे के लाने सहर के हाट-बजार जा रओ थो। दादा ने बऊ से पूछी, "काय डुकरिया! तोहे तो कछु सौदा-समान नईं बुलवानो बजार से?" बऊ बोली, "अब तुम सबई तो जानत हो, के मौड़ा के ब्याव में का-का समान लगत है। मेरे काजे तो तनक-सी हरदी और एक नोनो-सो बन्ना लेत अइयो।" दादा ने कई, "हओ लेत आहूँ।" ऐसी कहके दादा बजारे चलो गओ।

दादा ने बजार पोंच के सबरो सौदा-समान ले लओ, मनों बन्ना लेबे की सुरतई नईं रई। दादा समान की पुटरिया मूँड़ पे धरके गाँव तन चल परो। बो बजार से भौत दूर निकर आओ तो बाखों सुरत आई के हरजू ने एक ठों बन्ना भी मँगाओ हतो। बाने सोची के अब इत्ती दूर से लौटके बन्ना लेबे जाऊँ तो लौटत-लौटत रातई हो जैहे? दादा उतई बैठके सुस्तान लगो। बो बैठो-बैठो सोचा-बिचारी में परो थो के मैं अब का करूँ?

जितै दादा बैठो थो उतईं बाजू बारे खेत में एक लड़ैया पाँव से मट्टी खोद रओ थो। दादा लड़ैया तन देखके कछु सोचन लगो। सोचत-सोचत दादा के मौं से निकर गई –

"खुदर-खुदर का खोदे रे, हरजू के बन्ना।"

दादा की आबाज सुनके लड़ैया ठुमक गओ और दादा की तन देखन लगो। दादा फिर बोल परो –

"टुकर-मुकर का देखे रे, हरजू के बन्ना।"

अब तो दादा खों देखके लड़ैया ने गदबद दे दई और जंगल तन जाके हरबिल्यान हो गओ। दादा मौज में आके फिर गान लगो –

"हिरन चौकड़ी भागे रे, हरजू के बन्ना।"

दादा ने मन में सोची के बातई-बात में जो तो अच्छो बन्ना बन गओ, चलो जोई बन्ना बऊ खों दे देहूँ।

दादा खुसी-खुसी घरे आ गओ। सबरो समान बऊ खों सौंप दओ। समान धर के बऊ ने पूछी, "काय मैंने तुमाय से बन्ना लाबे की कै दई ती, लेके आये कि नईं?" दादा बोलो, "लेओ! जा भी कछु भूलन बारी बात है, जो देख कित्तो अच्छो बन्ना लेके आओ हूँ।" ऐसी कहके दादा ने बन्ना गाके सुना दओ। बन्ना सुनके बऊ भौतई खुस भई। बऊ ने बन्ना खों सम्हार के धर लओ फिर काम-धन्धे से लग गई।

एक दिना रात के बऊ चखिया में हरदी पीस रई ती और संग में बन्ना भी गा रई ती। उत्तीं बिरियाँ घर में एक चोर भरा गओ। चोर

ने सोची के जा घरे ब्याव है सो खूबई माल-मसाले की घल जाय। दादा तो खेत में सो रओ हतो, घरे बऊ अकेली ती। मौका देखके चोर ने दिवार में सेंद लगाबे की सोची। उतै चोर दिवार खोद रओ तो, इतै बऊ बन्ना गा रई ती –

"खुदर-खुदर का खोदे रे, हरजू के बन्ना।"

गानो सुनके चोर ठुमक गओ। कछु चिमा के जितै बऊ बन्ना गा रई ती, उतै की तन देखन लगो। बऊ तो बन्ना गाबे में मगन ती, बाने आंगे की कड़ी फिर गा दई –

"टुकर-मुकर का देखे रे, हरजू के बन्ना।"

अब तो चोर ने भियास लई के लेओ भैया जा डुकरिया ने तो मोहे चीन्ह लओ। जदि मैं पकरा गओ तो फिर खैर नइयाँ। जा सोचके चोर अपनो टाटा-पोंगा समेट के भगन लगो। उतै बऊ आंगे की कड़ी फिर गान लगी –

"हिरन चौकड़ी भागे रे, हरजू के बन्ना।"

जा सुनके तो चोर के देवता ठण्डे पर गये। बाने दिवार फाँद के ऐसी चौंक धरी के अपने घरई जाके दम लई।

किस्सा हती खतम।

*

कहानी में आए बुन्देलखण्डी शब्द

बा/बे - वो/वह
बाहे - उसे
बाने - उसने
बामें - उसमें
बाखों - उसको
बोई - वही
मोखों/ मोहे - मुझे
मोसे - मुझसे
तोकूँ - तुझको
उन्ने - उन्होंने
मौड़ा - लड़का
मौड़ी - लड़की
बऊ - बुढ़िया
झाँ - यहाँ
भाँ - वहाँ
झईं - यहीं
भईं - वहीं
इतै-उतै - इधर-उधर
जितै - जिधर
मनों - लेकिन
भौत - बहुत
नईं - नहीं
गैल - रास्ता/ गली
मोंग - चुप हो जाना
दोहनिया - दही जमाने का बरतन
दही बिलोना - दही मथना
निगत - पैदल चलना
सपरना - नहाना
बरीतो - भोजन पकाने में प्रयुक्त कण्डा-लकड़ी
भरा गओ - अन्दर चले जाना
बिगारो - बिगाड़ा
उन्ना-कपरा - कपड़े
खों - को
काजे - के लिए
गदबद - दौड़
सपाटे - तेज़ी से
गोई - दोस्त
धूरा - धूल-मिट्टी
घूरा - कूड़ा-करकट का ढेर
सूद-सला - सलाह मशविरा
फुलन्दी - गर्व से इतराना
ऐरो - आहट
सुटपुटाना - डरना
जिंघा - जगह
चिमा गए - दुबक गए
ताव - हिम्मत
तनक - छोटे, ज़रा
गुन्ताड़ो - हिसाब लगाना
अबेर - देर
डंगरा - खरबूज
कलींदे - तरबूज़
भुनसारे - सुबह-सुबह
जुनैया - चाँदनी
टेम/ बिरियाँ/ बेरा - वक्त

गेंत लेना - पकड़ना
मुतकों - ज़्यादा
लपकौ - किसी चीज़ को खाने या पाने की आदत लग जाना
छनो-कंचन - साफ शुद्ध
लुरास - पानी में लोटने की इच्छा
गुपची - डुबकी
मंगरी - खपरैल वाले घर का ऊपरी भाग
चिंगत - निकलना
खिझान - परेशान करना
बुहारी - झाड़ू
कैनात - कहावत
चखिया - छोटी चक्की
पोटना - मीठी-मीठी बातें करके स्वार्थ साधना
भड़या - चोर
हरबिल्यान - नौ दो ग्यारह होना
ब्यारी - रात का खाना
अलोंनी - फीकी
नोन - नमक
सुरत - याद रखना
बन्ना - लड़के की शादी में गाया जाने वाला गीत
चकरचालो - हलचल, चहल-पहल
ठुमक - रुक जाना
घलना - मज़ा आना
भियास लई - आभास होना
चौंक देना - तेज़ दौड़ना
टाटा-पोंगा - साज़-सामान

अहाड़ गओ, पहाड़ गओ
बुन्देलखण्डी लोककथाओं का संकलन
AHAAD GAO, PAHAAD GAO
BUNDELKHANDI LOKKATHAON KA SANKLAN

कहानी: मनोज साहू 'निडर'
चित्र: शुभम लखेरा
डिज़ाइन: कनक शशि
सम्पादन: सीमा

कहानी: मनोज साहू 'निडर'
यह किताब क्रिएटिव कॉमन्स के Attribution-Non-Commercial-NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) लाइसेंस के अन्तर्गत है जिसका पूरा विवरण https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/ पर उपलब्ध है।

इस कहानी का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में लेखक और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए प्रकाशक के ज़रिए लेखक से अवश्य सम्पर्क करें।

चित्र कॉपीराइट © शुभम लखेरा

पराग इनिशिएटिव टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

संस्करण: सितम्बर 2021 (2000 प्रतियाँ)
पहला पुनर्मुद्रण: जुलाई 2023 (3000 प्रतियाँ)
कागज़: 100 gsm मैपलिथो व 220 gsm एफबीबी (कवर)
ISBN: 978-93-91132-17-0
मूल्य: ₹ 40.00

प्रकाशक: एकलव्य फाउंडेशन
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72
वेबसाइट: www.eklavya.in; ईमेल: books@eklavya.in

मुद्रक: भण्डारी प्रेस, भोपाल (मप्र)

मनोज साहू 'निडर'

मनोज साहू 'निडर' युवा शिक्षक व रचनाकार हैं। जनपद शिक्षा केन्द्र बाबई, ज़िला होशंगाबाद में जनशिक्षक के पद पर कार्यरत हैं। गतिविधि आधारित शिक्षण व लोक साहित्य में गहरी रुचि रखते हैं।

अक्कड़-बक्कड़, बैठ घोड़ा पानी पी, एक दो दस, खेलो गणित, ढोंगी लड़ैया उनकी एकलव्य से प्रकाशित किताबें हैं।

शुभम लखेरा

शुभम लखेरा मध्य प्रदेश के एक छोटे शहर चन्देरी से हैं। उन्होंने गवर्नमेंट फाइन आर्ट कॉलेज, ग्वालियर से पेंटिंग में ग्रेजुएशन किया है। रियाज़ एकेडमी, भोपाल से एक साल का इलस्ट्रेशन कोर्स भी किया है। वह पिछले पाँच सालों से बाल सहित्य के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। वह *चकमक, प्लूटो, साइकिल, पाठशाला, संदर्भ, फिरकी* बाल पत्रिकाओं के लिए काम कर चुके हैं। उन्होंने डकबिल, तूलिका बुक्स, चाइल्ड फंड इंडिया, एनसीईआरटी, नवनीत बुक, एकलव्य, एलएलएफ और कई अन्य प्रकाशकों के साथ काम किया है।

पेश हैं बुन्देली लोककथाएँ। नानी, परनानी के ज़माने की, आने वाली पीढ़ियों की खातिर। इनमें खनक है बुन्देली अंचल की, मिठास है बुन्देली लहज़े की। इनमें हास्य है, दाँवपेंच है और जीवन के अनेकों रंग भी। आइए, मिलकर इन कहानियों में गोता लगाएँ!

एकलव्य

मूल्य: ₹ 40.00

9 789391 132170